2 आन का मान

(हरिकृष्ण 'प्रेमी')

वाराणसी, लखनऊ, इटावा, बरेली, फर्रुखाबाद, एटा, शाहजहाँपुर, उन्नाव, हमीरपुर।

हरिकृष्ण प्रेमी द्वारा रचित नाटक 'आन का मान' की विषय-वस्तु मुगलकालीन भारत के इतिहास से अवतरित है, जिसमें राजपूत सरदार दुर्गादास की स्वाभाविक बहादुरी, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि को चित्रित कर उसके व्यक्तित्व की महानता को प्रस्तुत किया गया है। नाटककार ने इस नाटक के माध्यम से मानवीय गुणों को प्रस्तुत किया है, साथ ही समाज में साम्प्रदायिक सौहार्द्र के संदेश को प्रसारित करने का सफल प्रयास किया है। इस नाटक में वीर दुर्गादास जहाँ भारतीय हिन्दू संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं, वहीं इनके समानान्तर मुगल सत्ता को रखा गया है। 'आन का मान' नाटक का प्रमुख उद्देश्य भारतीय युवकों एवं नागरिकों में स्वदेश के प्रति प्रेम की भावना का संचार, राष्ट्रीय एकता, धार्मिक सहिष्णुता, विश्वबन्धुत्व, सत्य व नैतिकता जैसे मानवीय भावों का चित्रण कर समाज में उनकी स्थापना को प्रेरित किया गया है।

'आन की मान' नाटक की कथावस्तु (सारांश)

प्रथम अंक–नाटक का प्रारम्भ मुगल शहजादी सफीयतुन्निसा और बुलन्द अख्तर के पारस्परिक बातचीत से होता है। दोनों अपने पिता अकबर के ईरान चले जाने के बाद वीर दुर्गादास राठौर के यहाँ पल रहे हैं। दोनों की बातचीत का विषय औरंगजेब की संकीर्ण विस्तारवादी नीति की आलोचना है। फिर दुर्गादास का प्रवेश होता है। वह औरंगजेब के हिंसक कारनामों को उनके सामने खोलता है, जिससे दोनों क्षुब्ध हो जाते हैं। दुर्गादास और शहजादा अख्तर थोड़ी देर में तुरही की आवाज सुनकर शत्रु का सामना करने के लिए चले जाते हैं। अकेली शहजादी सफीयतुन्निसा चाँदनी रात के सौन्दर्य पर मुग्ध हो गीत गाने लगती है। गीत के स्वर को सुनकर अजीत सिंह पहुँच जाते हैं और दोनों में प्रेमालाप होने लगता है। इसी बीच वीरवर दुर्गादास वापस आ जाते हैं। वे दोनों के प्रेमालाप को उचित नहीं मानते और उन्हें समझाते हैं। फिर मुकुन्ददास खीची कोई गोपनीय सन्देश दुर्गादास के पास लाते हैं, जिससे अजीत सिंह को अविश्वास हो जाता है; किन्तु कासिम खाँ उसका निराकरण कर देते हैं। अन्त में औरंगजेब की ओर से शहजादी और शहजादे को वापस कराने के लिए ईश्वरदास सन्धि का प्रस्ताव लेकर आते हैं और शुजाअत खाँ को लेकर दुर्गादास से आमने-सामने बातचीत करा देते हैं। अजीत सिंह अपने उतावलेपन में आकर शुजाअत खाँ पर तलवार उठा लेते हैं, किन्तु दुर्गादास इसे अनुचित मानकर रोक देता है। नाटक के प्रथम अंक में बस इसी कथा का उल्लेख है।

द्वितीय अंक–औरंगजेब की भी दो पुत्रियाँ हैं—मेहरु तथा जीनत। मेहरु औरंगजेब द्वारा हिन्दुओं पर किये जा रहे अत्याचारों का विरोध करती है। जीनत पिता की समर्थक है। औरंगजेब अपनी पुत्रियों की बात सुनता है तथा मेहरु द्वारा बताये अत्याचारों के लिए पश्चात्ताप करता है। औरंगजेब अपनी पुत्रियों को जनता के साथ उदार व्यवहार करने के लिए कहता है। औरंगजेब अपने अन्तिम समय में अपनी वसीयत करता है कि उसका संस्कार सादगी से किया जाए। इस समय ईश्वरदास दुर्गादास को बन्दी बनाकर औरंगजेब के पास लाता है। औरंगजेब अपने पौत्र-पौत्री बुलन्द तथा सफीयत को पाने के लिए दुर्गादास से सौदेबाजी करता है, परन्तु दुर्गादास इसके लिए तैयार नहीं होते।

तृतीय अंक–तृतीय अंक सफीयतुन्निसा (शहजादी) के 'अगर पंख मैं भी पा जाती–नभ के पार त्वरित उड़ जाती।' गीत से प्रारम्भ होता है। फिर सफीयतुन्निसा और अजीत सिंह की बातचीत होती है, जिसमें एक ओर अजीत सिंह की भावुकता और दूसरी ओर सफीयतुन्निसा की सच्ची प्रेम-भावना का दिग्दर्शन कराया गया है। सफीयतुन्निसा अजीत सिंह से सच्चा प्रेम-भाव रखते हुए मारवाड़ और अजीत सिंह के हित में उससे विवाह करना नहीं चाहती। दूसरी ओर अजीत सिंह क्षणिक आवेश और भावुकता में

सफीयतुन्निसा को जबर्दस्ती अपने प्रेम-पाश में बाँधे रखना चाहते हैं। भाई शहजादा बुलन्द अख्तर भी जाता है। वह भी अजीत सिंह को समझाने का असफल प्रयास करता है। बुलन्द अख्तर के चले जाने के बाद अजीत सिंह पुन: सफीयतुन्निसा से प्रेमालाप करने लगते हैं। इसी बीच दुर्गादास दो हृदयों के मधुर मिलन को नष्ट करने लगते हैं और अजीत सिंह को कर्त्तव्य का ध्यान दिलाते हुए सफीयतुन्निसा को औरंगजेब के हाथों में सौंपने का कारण बतलाते हैं—"राजपूत, शत्रु-परिवार की नारियों की उतनी ही प्रतिष्ठा करते हैं जितनी माँ-बहनों के सम्मान की। मुझे आज मारवाड़ में शहजादी की प्रतिष्ठा सुरक्षित दिखायी नहीं पड़ती।"

अजीत सिंह दुर्गादास का विरोध करता है और अपने अधिकार से सफीयतुन्निसा को रोकने की घोषणा करता है; किन्तु दुर्गादास निर्भीकतापूर्वक इसका विरोध करता है। इस बीच मुकुन्ददास खीची मेवाड़ के राजपूत के आगमन की सूचना देते हैं, जो मेवाड़ की राजकुमारी के साथ मारवाड़ के महाराजा अजीत सिंह का विवाह सम्पन्न कराने हेतु सगाई का टीका लेकर आये हैं। अजीत सिंह इनका विरोध करते हैं, किन्तु सफीयतुन्निसा इस सम्बन्ध को मारवाड़ के हित में उचित मानकर इस सम्बन्ध को स्वीकारने हेतु अजीत सिंह को सहमति देती है।

इसी बीच बुलन्द अख्तर और कासिम खाँ एक पालकी के साथ आते हैं। शहजादी सफीयतुन्निसा सम्मान सहित पालकी पर बिठाकर औरंगजेब के पास भेज दी जाती है। दुर्गादास उसकी पालकी को अपने कन्धे का सहारा देकर शहजादी को सम्मान देते हैं। अजीत सिंह रोकना चाहते हैं, किन्तु कासिम खाँ और मुकुन्द दास उन्हें रोक देते हैं। अजीत सिंह क्रुद्ध होकर दुर्गादास को राज्य से निर्वासित कर देते हैं। पालकी बढ़ जाती है और इसी दृश्य के साथ तीसरा और अन्तिम अंक का पर्दा गिर जाता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. 'आन का मान' नाटक के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

प्रश्न 2. नायक दुर्गादास का चरित्र-चित्रण कीजिए।

प्रश्न 3. 'आन का मान' नाटक की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 4. 'आन का मान' नाटक के भावनात्मक स्थलों का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 5. 'आन का मान' नाटक की कथावस्तु संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए।

प्रश्न 6. 'आन का मान' नाटक के प्रथम अंक की कथा संक्षेप में लिखिए।

प्रश्न 7. 'आन का मान' नाटक के द्वितीय अंक की कथा संक्षेप में लिखिए।

प्रश्न 8. सिद्ध कीजिए कि 'आन का मान' नाटक दुर्गादास के आदर्श चरित्र पर आधारित है।